Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 1, January-2021, ISSN 2230-7540

उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा के महत्व का अध्ययन

कविता सागर[1]*, डॉ. बिनय कुमार[2]

[1] शोधार्थी, मालवांचल विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

[2] पर्यवेक्षक, मालवांचल विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

सारांश- ***एक महिला को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा बुनियादी उपकरण है; इसके अलावा, शिक्षा विकास की कुंजी है। भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की है, लेकिन पर्याप्त नहीं है और निश्चित रूप से भारत को स्वतंत्रता मिली है, लगभग साठ प्रतिशत लड़कियां/महिलाएं साक्षर नहीं हैं। उनमें से अधिकांश कभी स्कूल या किसी अन्य शिक्षा कार्यक्रम में नहीं गए हैं। शिक्षा-बुनियादी, कार्यात्मक या डिजिटल, हमेशा एक व्यक्ति को अज्ञानता और मासूमियत के अंधेरे से बाहर निकालती है। स्वच्छता के महत्व, अच्छी आदतों और विभिन्न विषयों के ज्ञान के बारे में जागरूकता एक महिला को अपने परिवार का समर्थन करने और अपने बच्चों को समाज के बेहतर नागरिक के रूप में तैयार करने में मदद करती है। लड़कियों को जीवन कौशल की जरूरत होती है। गंभीर रूप से सोचने, सहानुभूति रखने और खुद पर भरोसा करने से उन्हें दिन-प्रतिदिन की चुनौतियों का सामना करने और सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है। जब लड़कियां इन कौशलों को सीखती हैं और उनका दैनिक उपयोग कैसे करती हैं, तो वे उन चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर हो जाती हैं, जिनका वे सामना कर सकती हैं, लिंग और कई स्थितियों से। बालिका विद्यालय चलाने का प्राथमिक उद्देश्य बालिकाओं के लिए एक सुरक्षित और आरामदायक वातावरण प्रदान करना है। भारत में, लड़कियों को शायद ही कभी उचित शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलता है, और ये स्कूल सुनिश्चित करते हैं कि उन्हें पढ़ने के लिए सबसे अच्छा माहौल मिले। वर्तमान पेपर भारत में उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा के महत्व पर केंद्रित है।***

मुख्यशब्द - ***बालिका शिक्षा, माध्यमिक विद्यालय, राष्ट्रीय कार्यक्रम***

----------X----------

1. प्रस्तावना

भारत सभी बच्चों, विशेषकर बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सर्व शिक्षा अभियान जैसी योजनाओं के माध्यम से, हम 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हालाँकि, शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित करने के बाद भी, देश बालिकाओं को शिक्षित करने में कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। लड़कियों के प्रति परिवारों की रूढ़िवादी मानसिकता और समाज में उनकी अहमियत सबसे बड़ी अड़चन है। देश के कई हिस्सों में खासकर ग्रामीण इलाकों में, लड़कियां अभी भी घरेलू परिश्रम तक ही सीमित हैं। भारत सरकार ने यह सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों की शुरुआत की है कि एक लड़की को शिक्षा प्राप्त करने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ना चाहिए। लेकिन फिर भी, बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। इसके लिए आम तौर पर लोगों की प्रतिबद्धता के एक बड़े स्तर के साथ एक बहुत प्रभावी कार्यान्वयन ढांचे की आवश्यकता होगी। जब तक हम महिलाओं की शिक्षा के लाभों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा नहीं करेंगे, तब तक इन सभी कार्यक्रमों से वांछित परिणाम नहीं निकलेंगे। समाज और राष्ट्र के विकास के लिए लड़कियों की क्षमताओं को विकसित करने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। उसके लिए सरकार ने विभिन्न स्तरों पर (प्राथमिक, माध्यमिक और

उच्च स्तर पर) लड़कियों के लाभ के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए। माध्यमिक स्तर पर 10-15 वर्ष की आयु वर्ग में बालिकाओं के नामांकन को बढ़ावा देने के लिए, विशेष रूप से जो पढ़ रहे हैं और ऐसी लड़कियों की माध्यमिक स्तर की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए, केंद्र प्रायोजित योजना और माध्यमिक शिक्षा के लिए लड़कियों को प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना मई, 2008 से शुरू की गई थी ।

2. माध्यमिक शिक्षा

अतीत की तुलना में बड़ी संख्या में लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा पूरी करने और माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल प्रणाली में प्रवेश मिल रहा है। माध्यमिक शिक्षा 14-18 वर्ष के आयु समूहों के बीच प्रदान की जाती है। मुख्य रूप से कला, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक धाराओं में विभिन्न धाराओं में अधिक से अधिक छात्राओं को लाने का प्रस्ताव है। बेबीलोन डिक्शनरी के अनुसार, "माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य शिक्षा का अंतिम चरण है, प्राथमिक शिक्षा से पहले और उच्च शिक्षा के बाद"। माध्यमिक शिक्षा भारत सरकार के नियंत्रण में विभिन्न संगठनों द्वारा प्रदान की जाती है।

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
- केंद्रीय विद्यालय संगठन
- नवोदय विद्यालय समिति

ये वे संगठन हैं जो लड़कियों के साथ-साथ लड़कों को बड़े पैमाने पर माध्यमिक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और ये देश में लिंग अंतर को कम करने के प्रयास कर रहे हैं।

3. भारत में उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा का महत्व

उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियां विकासशील देशों में गरीबी समाप्त करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक हैं। उनकी शिक्षा का लाभ व्यक्तियों, उनके परिवारों और पूरे समाज द्वारा देखा जाता है। इन लाभों में शामिल हैं: महिलाओं के बच्चों की संख्या को कम करना; शिशु और बाल मृत्यु दर को कम करना; कम मातृ मृत्यु दर; एचआईवी/एड्स संक्रमण से बचाव; नौकरियों और अधिक कमाई वाली महिलाओं की संख्या में वृद्धि। लड़कियों की शिक्षा निरक्षरता को खत्म करने में मदद करती है; आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास विकसित करें। लड़कियों के लिए शिक्षा में देरी से शादी और युवा लड़कियों के लिए गर्भावस्था का लाभ हो सकता है। एक लड़की की 20 साल की उम्र से पहले शादी हो जाने और अक्सर उसके पति द्वारा दुर्व्यवहार का शिकार होने के बजाय, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय में भाग लेने वाली लड़कियों के कहने की संभावना अधिक होती है कि वे किससे शादी करती हैं। स्कूल जाने वाली लड़कियां भी परिवार नियोजन के अधिक प्रभावी तरीकों का उपयोग करने में सक्षम होती हैं और इसलिए उनके बच्चे कम और स्वस्थ होते हैं। एक शिक्षित लड़की और महिला ने एचआईवी/एड्स के बारे में सीखा होगा और खुद को इस बीमारी से बचाने के कई अलग-अलग तरीकों को जानेंगे। स्कूली शिक्षा के हर साल एक महिला को अपने और अपने परिवार के लिए बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलती है। स्कूल जाने वाली महिलाओं के परिवार अक्सर स्वस्थ होते हैं। इन महिलाओं के क्लीनिक या डॉक्टरों से चिकित्सा सहायता लेने की अधिक संभावना होती है। क्योंकि वे पढ़ सकती हैं, साक्षर लड़कियां डॉक्टर के विस्तृत निर्देशों को समझ सकती हैं और जरूरत पड़ने पर मदद के लिए अनुवर्ती कार्रवाई कर सकती हैं। ये महिलाएं पोषण संबंधी लेबल भी पढ़ सकती हैं और अपने परिवार को स्वस्थ भोजन प्रदान कर सकती हैं जो विकास और कम कोलेस्ट्रॉल को बढ़ावा देते हैं। शिक्षा युवाओं को खुद को और अपने घर को साफ और सुरक्षित रखने का महत्व भी सिखाती है।

4. शिक्षा के महत्व की योजनायें

महिला समाख्या कार्यक्रम

महिला समाख्या (एमएस) महिला सशक्तिकरण के लिए एक चालू योजना है जिसे 1989 में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए एक ठोस कार्यक्रम में शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति के लक्ष्यों का अनुवाद करने के लिए शुरू किया गया था, विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समूहों से। .

प्रारंभिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीईजीईएल)

यह कार्यक्रम जुलाई, 2003 में शुरू किया गया था। यह उन लड़कियों तक पहुंचने के लिए एक प्रोत्साहन था, जिन तक एसएसए अन्य योजनाओं के माध्यम से पहुंचने में सक्षम नहीं थी। एसएसए ने "लड़कियों तक पहुंचने में सबसे कठिन" का आह्वान किया। इस योजना ने भारत के 24 राज्यों को कवर किया है। एनपीईजीईएल के तहत लड़कियों को बेहतर अवसर प्रदान करने के लिए "मॉडल स्कूल" स्थापित किए गए हैं।

माध्यमिक शिक्षा के लिए लड़कियों को प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना (एनएसआईजीएसई)

माध्यमिक शिक्षा के लिए लड़कियों को प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना 14-18 आयु वर्ग में विशेष रूप से माध्यमिक शिक्षा स्तर पर बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसे स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, एमएचआरडी, भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया है। इस योजना में विवाहित लड़कियों, निजी गैर सहायता प्राप्त स्कूलों में पढ़ने वाली लड़कियों और केंद्र सरकार द्वारा संचालित स्कूलों जैसे केवीएस, एनवीएस आदि में नामांकित लड़कियों को शामिल नहीं किया गया है। इस योजना के तहत, रुपये की राशि। 3000/- पात्र लड़कियों के नाम सावधि जमा के रूप में जमा किया जाता है। लड़कियां 18 वर्ष की आयु तक पहुंचने और 10 वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उस पर ब्याज सहित राशि निकालने की हकदार हैं।

सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए)

भारत सरकार ने भारत में बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान देने के साथ प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण (यूईई) को सुनिश्चित करने के लिए अपना प्रमुख कार्यक्रम सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) शुरू किया है। एसएसए राज्य सरकारों के साथ साझेदारी में क्रियान्वित किया जा रहा है। एसएसए डिजिटल डिवाइड को पाटने के लिए कंप्यूटर शिक्षा प्रदान करना भी चाहता है।

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए)

आरएमएसए की एकीकृत योजना के तहत, हस्तक्षेपों में नए माध्यमिक विद्यालयों का निर्माण, मौजूदा स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग शौचालय के साथ शौचालय ब्लॉक का प्रावधान, शिक्षकों के क्वार्टर का निर्माण, बालिका छात्रावासों का निर्माण, शिक्षा में सुधार के लिए सशक्तिकरण/जागरूकता शिविरों का आयोजन शामिल है। माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की आदि।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना

लड़कियों को प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना 2004 में शुरू की गई थी। यह योजना विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित लड़कियों के लिए डिज़ाइन की गई थी।

एकल बालिका के लिए स्वामी विवेकानंद छात्रवृत्ति

लड़कियों के लिए शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर स्कूल छोड़ने का अनुपात लड़कों की तुलना में बहुत अधिक है। महिला शिक्षा के स्वामी विवेकानंद के विचारों को ध्यान में रखते हुए और लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, यूजीसी ने सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के लिए एकल बालिका के लिए स्वामी विवेकानंद छात्रवृत्ति की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से ऐसी लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा की प्रत्यक्ष लागत की भरपाई करना है जो एकमात्र लड़की होती हैं।

साक्षर भारत

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन को 2009 में शुरू किए गए अपने नए संस्करण, साक्षर भारत के साथ पुनर्गठित किया गया था। इसका उद्देश्य वयस्क शिक्षा में तेजी लाना है, विशेष रूप से उन महिलाओं (15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में) के लिए जिनकी औपचारिक शिक्षा तक कोई पहुंच नहीं है, लक्षित महिला साक्षरता के रूप में महिला सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण। इससे महिलाओं में साक्षरता में 53.67% (जनगणना 2001) से बढ़कर 65.46% (2011 की जनगणना) हो गई है। यह भी पहली बार है कि दशक के दौरान जोड़े गए कुल 217.70 मिलियन साक्षरता में से, महिलाओं (110.07 मिलियन) की संख्या पुरुषों (107.63 मिलियन) से अधिक है (स्रोत: महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार (बारहवीं पंचवर्षीय योजना) .

5. भारत में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की शैक्षिक स्तर की चुनौतियाँ

- यह आमतौर पर कई लोगों द्वारा स्वीकार किया जाता है कि स्कूली शिक्षा के बच्चे के लिए असंख्य

लाभ हैं। अधिकांश भारतीय बच्चे, विशेषकर लड़कियां इन लाभों से वंचित हैं। छोटे भाई-बहनों की देखभाल जैसी पारिवारिक जिम्मेदारियों को साझा करने के लिए लड़कियों को अक्सर स्कूल से निकाल दिया जाता है।

- भारत में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बेटियों को शिक्षित करने के प्रति माता-पिता का नकारात्मक रवैया महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के लिए महिला शिक्षकों की कमी एक और बाधा है। यदि महिला शिक्षक हों तो लड़कियों के स्कूल जाने की संभावना अधिक होती है और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि अधिक होती है। वर्तमान में, प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की संख्या केवल 47.70% महिलाओं की है।
- भारत में उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के विकास में स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी एक प्रमुख समस्या है। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (2014) ने सहमति व्यक्त की कि लड़कियों के शौचालय की सुविधा की कमी के कारण, प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पीने के पानी और प्रतीक्षा कक्ष छोड़ने वालों की दर पिछले दशकों की तुलना में बढ़ी है।
- मध्य स्तर से ऊपर की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छुक कई लड़कियां, जिनके लिए सुविधाएं उनके घरों से दूर उपलब्ध हैं, छात्रावास की व्यवस्था के अभाव में इन सुविधाओं का लाभ नहीं उठा सकती हैं।
- माता-पिता अक्सर स्कूलों में जाने वाली लड़कियों के लिए असुरक्षा का विरोध करते हैं। लड़कियों के अपहरण, बलात्कार और छेड़छाड़ की घटनाओं ने एक निश्चित उम्र से अधिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए माता-पिता और छात्राओं के उत्साह को कम कर दिया है; इसके बाद वे अपने घरों में कैद हो जाते हैं।
- हालांकि शिक्षा मुफ्त होनी चाहिए, लेकिन बच्चों को स्कूल भेजने में बहुत अधिक लागत आती है। गरीबी में रहने वाले परिवार के लिए वर्दी, पाठ्यपुस्तक, जूते या बस का किराया बहुत अधिक हो सकता है। बहुत बार, माता-पिता अपनी लड़कियों को घर पर रखना पसंद करते हैं और लड़कों को स्कूल भेजने के बजाय स्कूल भेजते हैं।
- देश के कई हिस्सों में, किसी विशेष समुदाय के लिए निकटतम प्राथमिक विद्यालय 4 या 5 घंटे की पैदल दूरी पर हो सकता है। इसके अलावा, लड़कियों को स्कूल जाते समय खतरों या हिंसा का सामना करना पड़ सकता है; इतने सारे माता-पिता अपनी बेटियों को घर पर और नुकसान के रास्ते से बाहर रखने का विकल्प चुनते हैं।
- आमतौर पर, लड़कियों को पानी लाने, अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने और अपनी माताओं को खाना पकाने और साफ करने में मदद करने के लिए कहा जाता है। इसके कारण, लड़कियों को स्कूल जाने का अवसर नहीं मिल पाता है क्योंकि घर में उनके योगदान को उनकी व्यक्तिगत शिक्षा से अधिक महत्व दिया जाता है।
- देश के कई हिस्सों में, बच्चों का स्वास्थ्य एक बड़ी चिंता का विषय है, खासकर अगर वे गरीबी का सामना कर रहे हैं। यदि लड़कियों को पोषण और स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त भोजन या पर्याप्त स्वच्छ पानी नहीं है, तो वे स्कूल जाने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती हैं।
- जब लड़कियों को कम उम्र में शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो उन्हें अक्सर उनके विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण उम्र में स्कूल से निकाल दिया जाता है।
- प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा में संक्रमण लड़कियों के लिए जीवन कौशल हासिल करने की कुंजी है जो उन्हें गरीबी के चक्र से बचने के लिए आवश्यक है। फिर भी, अक्सर ऐसा ही समय होता है जब कई लड़कियां जल्दी विवाह के कारण स्कूल छोड़ देती हैं।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा के प्रभारी अधिकारियों के उत्साह और रुचि की कमी एक और समस्या है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की विभिन्न योजनाओं और प्रावधानों को जमीनी स्तर पर लागू करने के लिए विभिन्न एजेंसियों और समुदाय के सदस्यों के बीच जागरूकता की कमी।

6. भारत में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की बाधाओं को दूर करने के लिए सुझाव

लड़कियों की शिक्षा राष्ट्रीय विकास का एक अभिन्न अंग है। हम निम्नलिखित का समर्थन करके लड़कियों को वह शिक्षा प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं जिसके वे हकदार हैं:

(1) शिक्षा तक समान पहुँच: शिक्षा में लड़कियों और लड़कों दोनों की समान पहुँच होनी चाहिए ताकि उनके बीच कोई भिन्नता न हो और वे अपनी शिक्षा जारी रख

सकें, योजना सामुदायिक पहल का समर्थन करती है जो शिक्षा की समान पहुँच के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, और यह लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए इसके महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाता है। योजना यह सुनिश्चित करने के लिए लिंग-संवेदनशील सीखने के वातावरण के निर्माण का भी समर्थन करती है कि लड़के और लड़कियां दोनों शिक्षा के अधिकार का आनंद लें।

(2) लैंगिक समानता: लैंगिक समानता सभी के लिए अच्छी है; लड़के और लड़कियां, महिलाएं और पुरुष। योजना लड़कों को संपूर्ण समुदायों में सामाजिक मानदंडों को बदलने में मदद करने के लिए लैंगिक समानता प्राप्त करने के समाधान में संलग्न करती है। अधिकतर यह लैंगिक समानता ग्रामीणों में अधिक परिचित है और वे अपने बच्चों को विशेष रूप से लड़कियों को शिक्षा के लिए नहीं भेजते हैं।

(3) लड़कियों की छात्रवृत्ति: छात्रवृत्ति से लड़कियों को ट्यूशन फीस, स्कूल की वर्दी, स्कूल की आपूर्ति और सुरक्षित परिवहन में मदद मिलती है। इसलिए उन्हें राज्य सरकार या केंद्र सरकार द्वारा दी गई इन सुविधाओं का उपयोग करना चाहिए।

(4) जेंडर भूमिकाओं को चुनौती देना: परिवार और सामुदायिक स्तरों पर जागरूकता बढ़ाने से लड़कियों के लिए शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलेगा। आम तौर पर आयोजित लैंगिक रूढ़ियों के संबंध में माता-पिता को खुले संवाद में शामिल करना भी महत्वपूर्ण है।

(5) स्कूलों में हिंसा की रोकथाम: योजना समुदायों के साथ काम करती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके स्कूल हिंसा मुक्त हैं और वे लड़कियों के लिए एक सुरक्षित सीखने का माहौल प्रदान करते हैं। योजना स्कूलों के साथ साथियों, रोल मॉडल और सलाहकारों के नेटवर्क बनाने, महिला शिक्षकों को प्रशिक्षित करने और लड़कियों को सीखने के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाने में मदद करने के लिए सामाजिक समर्थन प्रदान करने के लिए भी काम करती है।

(6) स्कूली शिक्षा में समय अवधि: ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए निश्चित स्कूली शिक्षा के घंटे उपयुक्त नहीं हैं, क्योंकि इन घंटों के दौरान घर पर या खेतों और खेतों में घरेलू काम के लिए उनकी आवश्यकता होती है। यह शिक्षा में लड़कियों की कम भागीदारी दर के कारणों में से एक है। लड़कियों की नामांकन दर और उनके प्रतिधारण में सुधार किया जा सकता है यदि लड़कियों को उनके लिए उपयुक्त अवधि के दौरान शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं, जब वे घरेलू कामों से मुक्त होती हैं। राजस्थान में शिक्षा कर्मी परियोजना और लोक जुम्बिश के माध्यम से लचीले स्कूल समय की कोशिश की गई है, और परिणाम उत्साहजनक हैं। उच्च अधिकारियों, समुदाय के सदस्यों, गैर सरकारी संगठनों और भारत के सभी लोगों को हमारे समाज से उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों से संबंधित विभिन्न बाधाओं को दूर करने की जिम्मेदारी लेनी होगी। हमारे देश के प्रत्येक नागरिक को यह याद रखना होगा कि उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के बिना राष्ट्रीय विकास हासिल नहीं किया जा सकता है।

7. निष्कर्ष

लड़का हो या लड़की हर बच्चे के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। यह दुखद है कि कुछ समुदाय अभी भी बालिकाओं की शिक्षा के साथ भेदभाव करते हैं। लड़कियों के सशक्तिकरण, समृद्धि, विकास और कल्याण के लिए शिक्षा प्रमुख कारक है। गर्भ से कब्र तक कन्या का भेदभाव सर्वविदित है। आर्थिक, शिक्षा, सामाजिक, राजनीतिक, स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, अधिकार और कानूनी आदि सभी क्षेत्रों में लड़कियों की निरंतर असमानता और भेद्यता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्पीड़ित लड़कियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में सशक्त बनाने की आवश्यकता है। सामाजिक रूप से निर्मित लैंगिक पूर्वाग्रहों के खिलाफ लड़ने के लिए, लड़कियों और महिलाओं को उस व्यवस्था के खिलाफ तैरना पड़ता है जिसके लिए अधिक ताकत की आवश्यकता होती है। ऐसी ताकत सशक्तिकरण की प्रक्रिया से आती है और सशक्तिकरण शिक्षा से आएगा। और ग्रामीण परिवर्तन लड़कियों की शिक्षा से आएगा। यह भारत के लिए सामाजिक और आर्थिक रूप से विकसित होने का एक बड़ा अवसर है। शिक्षित लड़कियां वे हथियार हैं जो घर और पेशेवर क्षेत्रों में अपने योगदान के माध्यम से भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। वे देश के साथ-साथ समाज में बेहतर अर्थव्यवस्था का कारण हैं। पेपर के उद्देश्य हैं: भारत में बालिका शिक्षा की हाल की स्थिति और चुनौतियों का दावा करना; भारत में उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की चुनौतियों को दूर करने के लिए संभावित सुझाव प्रदान करना। भारतीय शिक्षा आयोग 1964-66 ने ठीक ही जोर दिया, "हमारे मानव संसाधनों के पूर्ण विकास, घरों के सुधार और

बच्चों के चरित्र को उनके बचपन के सबसे प्रभावशाली वर्षों के दौरान उनके चरित्र को ढालने के लिए, लड़कियों की शिक्षा इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। हालाँकि, उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के प्रति जनता के रवैये में बदलाव से स्थिति में काफी सुधार होगा।

8. संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बोपल, अंकिता (2009)। "मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार: एक अंतर्दृष्टि", शिक्षा के नए मोर्चे, 42(4), पी। 397.

2. दास, एस. के. और मोहंती, प्रसमिता (2009)। "एजुकेशन ऑफ एडोलसेंट गर्ल्स: एन इंडियन पर्सपेक्टिव", न्यू फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, 42(1), पीपी. 64-65।

3. कुमार, जे. और संगीता (2013)। भारत में महिला शिक्षा की स्थिति। शैक्षिक कन्फैब। वॉल्यूम। 2(4); पी.पी. 165-176

4. शिवकुमार, एमए (2012)। पुडुचेरी क्षेत्र में शिक्षा और बालिकाएं: समस्याएं और परिप्रेक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च। Vol.1, P.P.-175-184।

5. त्यागी, आर.एस. (2010)। "भारत में स्कूली शिक्षा में लैंगिक असमानता", शिक्षा में न्यू फ्रंटियर्स, 43(3), पीपी. 316-317।

6. कुमार, जे. और संगीता (2013)। भारत में महिला शिक्षा की स्थिति। एजुकेशन कॉन्फैब। वॉल्यूम। 2(4); पी.पी. 165-176

7. लता, पी.एस. (2014)। महिला साक्षरता और विकास। ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, Vol.3; पी.पी. 1-3

8. वोरा, एच। (2014)। बालिका शिक्षा के लिए राज्यों द्वारा सर्वोत्तम अभ्यास। भारत की समृद्धि और कल्याण। पी.पी. -1-50

9. विश्व बैंक रिपोर्ट, (2008)। 21वीं सदी में बालिका शिक्षा। मानव विकास। पीपी. 23-305

10. दास, पी (2010)। स्कूली शिक्षा में लड़कियों के स्कूल छोड़ने की प्रक्रिया: भारत में चयनित मामलों का विश्लेषण। सशक्तिकरण में: शिक्षा और समानता ई-सम्मेलन। 12 अप्रैल - 14 मई। संयुक्त राष्ट्र बालिका शिक्षा पहल: न्यूयॉर्क।

11. डीआईएसई रिपोर्ट। (2012-13)। भारत में प्रारंभिक शिक्षा यूईई की ओर प्रगति। न्यूपा। नई दिल्ली।

12. डीआईएसई रिपोर्ट। (2013-14)। भारत में प्रारंभिक शिक्षा यूईई की ओर प्रगति। न्यूपा। नई दिल्ली।

13. डीआईएसई रिपोर्ट। (2014-15)। भारत में प्रारंभिक शिक्षा यूईई की ओर प्रगति। न्यूपा। नई दिल्ली।

Corresponding Author

कविता सागर*

शोधार्थी, मालवांचल विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

ईमेल kavitasagar671@gmail.com